शिखरिणी छन्द

शिखरिणी छन्द की प्रकृति-

यह वार्णिक छन्द है।

शिखरिणी छन्द का लक्षण-

रसैः रुद्रैश्छिन्ना यमनसभलागः शिखरिणी।

अर्थात् रस (=6) तथा रुद्र (=11) संख्यक अक्षरों के बाद यति वाली तथा क्रमशः यगण, मगण, नगण, नगण, सगण, भगण, एक लघु तथा एक गुरु वर्ण से युक्त शिखरिणी होती है।

उदाहरण-

चलापाङ्गां दृष्टिं स्पृशसि बहुशो वेपथुमतीं
रहस्याख्यायीव स्वनसि मृदु कर्णान्तिकचरः ।
करौ व्याधुन्वत्याः पिबसि रतिसर्वस्वमधरं
वयं तत्वान्वेषान्मधुकर हतास्त्वं खलु कृती ॥

अन्य उदाहरण-

यदा किञ्चिज्ञोऽहं द्विप इव मदान्धः समभवं
तदा सर्वज्ञोऽस्मीत्यभवदवलिप्तं मम मनः ।
यदा किञ्चित्किञ्चिद् बुधजनसकाशादधिगतं
तदा मूर्खोऽस्मीति ज्वर इव मदो मे व्यपगतः॥

विशेष-

क) इस छन्द के प्रत्येक चरण में 17 अक्षर हैं।

ख) 6 तथा 7 संख्यक अक्षरों के बाद यति होती है।

ग) इस छन्द का स्वरूप इस प्रकार है-

। ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ ।।। ।। ऽ ऽ।। ।ऽ

Dhananjay Vasudeo Dwivedi